स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (Ph.D.) हिंदी
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

(Ph.D. Synopsis)

"मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन"
(दक्खनी हिंदी के संदर्भ में)

शोध छात्रा

कुरेशी अंजुम जिलानी
(M.A.M.Phil.)

शोधनिर्देशिका

डॉ. शेख रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला
(M.A.M.Ph.D.)
हिंदी विभाग
हु. बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, बसमतनगर
जिला हिंगोली-431 512

शोधकेन्द्र

हिंदी भाषा साहित्य अनुसंधान केन्द्र
पीपल्स महाविद्यालय, नांदेड

जुलाई 2021

“मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन”

(दक्खनी हिंदी के संदर्भ में)

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रम	शीर्षक	पृष्ठांक
1.	भूमिका	3
2.	शोध का विषय	5
3.	विषय प्रवेश	5
4.	पूर्वानुमान	6
5.	परिकल्पना	6
6.	तथ्य संकलन	7
7.	शोध प्रबंध का उद्देश्य	7
8.	तथ्य विश्लेषण	13
9.	मूल्यांकन एवं निष्कर्ष	14
	संदर्भ ग्रंथ सूची (अ) मूल ग्रंथ (आ) आधार ग्रंथ (इ) हिन्दी कोश ग्रन्थ (ई) पत्र-पत्रिकाएँ (उ) अंग्रेजी ग्रन्थ	

“मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन”

(दक्खनी हिंदी के संदर्भ में)

1. भूमिका:

हमारा भारत वर्ष सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं अध्यात्मिक रूप से सर्वाधिक सम्पन्न देश माना जाता हैं। विभिन्न धर्म तथा जाति के लोग अलग-अलग क्षेत्र में रहते हैं। भौगोलिक रूप से दृष्टिपात करें तो हमारा देश विभिन्न राज्यों, जिलों तथा गाँवों में विभक्त हैं। हर क्षेत्र एवं गाँव की विचारधारा, रहन-सहन, संस्कृति अलग-अलग हैं। अपने-अपने क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्पराओं एवं धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का सहज-सुलभ माध्यम लोकगीत है। लोकगीतों में मानव-मात्र को आकर्षित करने की विशेष शक्ति निहित होती है। हमारा देश कृषि प्रधान देश हैं। यहाँ पर कोई भी गाँव, कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ लोकगीतों के स्वर गुंजायमान न हों। जब जन-जीवन के भाव अभिव्यक्त होकर अंकित हो जाते हैं, तो उनमें वहाँ की मिट्टी गुनगुनाने लगती है, खेत लहलहा उठते है, और गलियारे तथा आँगन नाच उठते हैं। यहाँ हमारे देश में प्रत्येक अंचल के अपने-अपने लोकगीत है। जैस- राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती आदि।

लोकगीतों में लोकसमाज की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का आत्मप्रकाश आलोकित रहता है। उस पर किसी के बंधन या अंकुश का जोर नहीं रहता। अर्थात जब समस्त जन-समाज में चेतन-अचेतन रूप में जो अन्तर्निहित भावनाएँ गीतबद्ध होकर अभिव्यक्त होती है, उन्हे ‘लोकगीत’ कहते हैं। इस प्रकार लोकगीत किसी भी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। लोकगीतों का जन्म व्यक्ति के नैतिक मूल्य, सामाजिक उत्सव, त्यौहारों, रीति-रिवाजों एवं सामूहिक कार्यों द्वारा हुआ है। यह मानव-मन की सरल, निर्दोष, स्वच्छन्द, उन्मुक्त एवं सहज अभिव्यक्ति है। ‘लोकगीत’ उस नदी की धारा के समान है जो ग्रामीण संस्कृति के गर्भ से निकलकर न केवल ग्रामीण समाज को शराबोर करती रहती है, वरन् वह अपनी शीतल वाणी रूपी जल से समग्र मानव समाज को शीतलता प्रदान करती है। जिस

प्रकार नदी की धारा गंदगी को बहा ले जाती है, उसी प्रकार से इन गीतों के द्‌वारा व्यक्ति अपनी विषमताओं और दुःखों को भुला देते हैं। 'लोकगीत' रूपी इस धारा में अनेक छोटी-मोटी धाराओं ने मिलकर उसे सागर के समान गंभीर भी बना दिया है। मन की अनेकों परिस्थितियों में उसने अपने मन के अनेक ताने-बाने बुने हैं। इसकी मधुर ध्वनि में बालक सोये हैं, युवाओं में प्रेम की मस्ती छाई है तो बुजुर्गों ने मन बहलाया हैं। वैरागियों ने उपदेश दिये हैं, विरही पुरुष तथा स्त्रियों ने मन की कसक मिटाई है। किसानों ने बड़े-बड़े खेत जोते हैं तो मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाये हैं। अर्थात जीवन की सहज क्रियाओं और व्यापारों में लीन जन-समुदाय के निश्चल, सरल और स्वाभाविक भाव गीतों के रूप में उनके कंठ से निकलने लगते हैं। खेत, नदी, पहाड़, मैदान, घर, त्यौहार इनके निर्माण स्थल हैं। हल चराते हुए, पशु चराते हुए, चक्की पीसते हुए, बर्तन मांजते हुए, प्रत्येक सामान्य कार्य व्यापार के समय इन गीतों का उदय हुआ हैं। डॉ. कुंज बिहारी दास अनुसार, जिन गीतों में मानव जीवन के सुख-दुःख, हर्ष-वेषाद, जीवन-मरण, आशा-निराशा आदि की अभिव्यंजना रहती है, उन्हें 'लोकगीत' कहते हैं ।

अतः लोक संस्कृति, लोक विश्वास एवं लोक परम्परा की रक्षा एवं निर्वाह करते हुए लोकजीबन अपनी संगीतात्मक प्रवृत्तियों की लयात्मक अभिव्यक्ति जिस माध्यम से करता है, वह 'लोकगीत' कहलाता है। मानव जब असभ्य था, वह अपने उद्‌गारों को प्रकट करने के लिए वाणी द्‌वारा कुछ अस्पष्ट शब्दों का उच्चारण करता था। उस समय वही वाणी उसकी कविता और वही अस्पष्ट शब्द अथवा ध्वनियुक्त स्फुरण उसका संगीत होता था। धीरे-धीरे समय के साथ यह प्राकृति संगीत के नाम से जाना जाने लगा और यही प्राकृतिक संगीत लोक संगीत में परिणत हो गया। लोक संगीत सेलोक संगीत की उत्पत्ति लोक उत्पत्ति के साथ हुई अर्थात जब व्यक्ति जन्मा तभी लोक संगीत का आर्विभाव हुआ। जिस प्रकार व्यक्ति के जन्मोत्सब पर लोक रंजकारी गीत या पंक्तियाँ गायी जाती है, और अपनी खुशी को प्रदर्शित करने हेतु ढोलक, नाल, नगाड़ा आदि का बादन किया जाता है,

वही लोक संगीत का स्वरूप है। लोकसंगीत को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है - (1.) लोकगीत, (2.) लोकवाद्य और (3.) लोकनृत्य। प्रस्तुत

2. शोध का विषय:

'लोकगीत' से सम्बन्धित है। लोकगीत दो शब्दों का समुच्चय है। 'लोक' और 'गीत' इन दो शब्दों के संयोग से बना है जिसका अर्थ लोक के गीत। मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है, और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार श्लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं हैं। बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोधियां नहीं है। 'गीत' वह शब्द जो केवल गेयता अर्थात गायक का ही भाव बोधन नहीं करता उसका संबन्ध काव्यकला से भी है। गीत या गान स्वर और लय के साथ शब्द का योग हो जाता है, जिससे यद्यपि उसका लचीलापन कुछ कम हो जाता है। किन्तु काव्य की विशेषताओं को ग्रहण कर लेने पर गान या गीत की उपयोगिता मानव के लिये बहुत बढ़ जाती है। सान्ध्यगीत की भूमिका में महादेवी वर्मा कहती है कि, सुख दुःख का भावावेशमयी अवस्था का विशेषकर गिने चुने शब्दों में स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है।

3. विषय प्रवेश:

अनुसंधित्सु उच्च शिक्षा के कारण हिन्दी भाषा से सम्पर्क कायम हुआ। तभी से दक्खनी भाषा की कहानी तथा कविताएँ पढ़ने में रूचि बढ़ी। क्योंकि अनुसंधित्सु जहाँ रहती है वहाँ कर्नाटक राज्य की सीमा निकट होने के कारण दक्खनी भाषा अधिक बोलचाल है। शोधनिर्देशक प्रा.डॉ.शेख रज़िया शहनाज़ से परिचय हुआ तो उन्होंने कुछ सवाल पुछे जैसे कि, (1.) कौनसी विधा में आपकी रूचि है? तथा (2.) कौनसी विधा पर आप काम करना चाहोंगी? तब मैंने जबाब में कहा मुझे मुस्लिम समाज के दक्खिनी हिंदी के लोकगीत

विधा में रूचि है। जवाब पाने पर उन्होंने अगला सवाल किया कि, आप कौनसे दक्खिनी के लोकगीत पढ़ती हो? मेरा यह जवाब पाकर उन्होंने संक्षिप्त रूप में लिखकर लाने के लिए कहा और मैंने वह लिखकर गुरूवर्य को दे दिया। लिखित सामग्री का गुरूवर्या ने मूल्यांकन किया और उन्होंने 'मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन" (दक्खनी हिंदी के संदर्भ में) इस शीर्षक पर अनुसंधान कने की अनुमति दे दी। तब मैंने निम्नलिखित पूर्वानुमान सामने रखकर अनुसंधान के कार्य का आरंभ किया।

4. पूर्वानुमान :

प्रत्येक अनुसंधान की पार्श्वभूमि रहती है। किसी-ना-किसी उद्देश से शोध कार्य का आरंभ किया जाता है। इसलिए अनुसंधान के उद्देश में पूर्वानुमान कौनसे है? इस बात का ज्ञान पूर्वानुमान से होता है। इस पूर्वानुमान के उद्देश से पाठक के विचारों को दिशा दी जाती है। अनुसंधान का उद्देश नवीन ज्ञान की प्राप्ती करना होता है।

5. परिकल्पना :

उपर्युक्त पूर्वानुमान ध्यान में रखकर 'मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन" (दक्खनी हिंदी के संदर्भ में)। लोकगीतों का अध्ययन करना एक नवीन ज्ञान की खोज करना और उन लोकगीतों का विवेचन का निर्णय, अनुसंधान, मिमांसा, परिक्षण और विश्लेषण छानबीन करना, जाँच करना का अध्ययन किया जायेगा ।

इस प्रकार की समस्या ध्यान में लेते हुए दक्खनी हिंदी के संदर्भ साहित्य में 'मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन" प्रखरता से पाठकों के सामने आएगा इसी कारणवश लोकगीतों का ज्ञान, सूक्ष्मता से किया हुआ अध्ययन भावी हिन्दी विषय के अध्यापक तथा अध्ययनकर्ता, छात्र-छात्राओं के सामने आसानी से प्रस्तुत होंगे। इस विषय की परिकल्पना स्पष्ट करने के हेतु अलग-अलग

समीक्षाकारों की परिभाषा दी गयी है। इसीसे ही शोध प्रबंध का उद्देश स्पष्ट और पूर्ण हो जाएगा। अतः शोध प्रबंध के उद्देश निम्नलिखित है।

6. तथ्य संकलन :

किसी भी कार्य को आरंभ करने से पूर्व उसका प्रारूप बनाया जाता है जैसे कि, उस कार्य को करने के लिए कौनसी सामग्री की आवश्यकता है, वह कितनी मात्रा में ली जाएगी और उस सामग्री का संकलन कहाँ से और कैसे किया जाएगा? यह स्पष्ट करना अत्यावश्यक है। ठीक वैसे ही दक्खनी हिंदी के संदर्भ साहित्य में ‘मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन” शीर्षक के तथ्य संकलन का अगर विचार किया जाए तो लोकगीतों की कृतियाँ यह पुस्तकालय तथा किसी ग्रंथालय में प्राप्त नहीं हो सकती। में प्राप्प हो सकती है। यह अनुमान अनुमानित रखकर तथ्यों की खोज प्रथमदर्शनी पुस्तकालय से शुरू होगी।

7. तथ्य विश्लेषण :

तथ्य का विश्लेषण करने हेतु इस शीर्षक ‘मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन” (दक्खनी हिंदी के संदर्भ में) का छः अध्यायों में विभाजन किया गया है।

8. शोध प्रबंध का उद्देश्य :

‘लोकगीत’ जनता जनार्दन की सम्पत्ति है। यह भगवान के विराट स्वरूप की भाँति विराट् और अनन्त है। यह उस निर्मल दर्पण के समान है, जिसमें ग्रामीण जनता की अनुभूतियों का विराट स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है। इसी दृश्टीसे मुस्लिम के दक्खिनी हिंदी के लोकगीतों का अध्यन करना मेरे अनुसंधान का उदेष्य है। ‘लोकगीत’ की निर्मल निर्झरिणी में अवगाहन कर केवल शरीर ही पवित्र नहीं होता प्रत्युत आत्मा भी पवित्र और पावन बन जाती है। इसमें जिस समाज का चित्रण किया है, वह स्वस्थ सदाचारी एवं

धर्मभीरू है, जिस नीति की प्रतिष्ठा की गई है, वह कल्याण मार्ग की ओर ले जाने वाली है। वह मंगलमय पथ की प्रदर्शिका है, जिस धर्म का वर्णन किया गया है। वह पीड़ित तथा मानवता के शोषण के ऊपर अवलम्बित नहीं है, जिस राजनीति का दिग्दर्शन कराया गया है, वह संघर्ष और विषाक्त वातावरण से कोसों दूर है। धर्म समाज और नीति का यही मनोरम चित्रण इस साहित्य की महत्ता को चार चाँद लगा देता है।

इसी दृश्टीसे मुस्लिम के दक्खिनी हिंदी के लोकगीतों अन्तर्गत लोकगीतों की भूमिका, लोकगीतों का वर्गीकरण, उनमें व्यक्त लोकजीवन तथा उसमें अभिव्यंजना शिल्प का लक्ष्य दर्शाया गया है। इन सबका बातों का अध्यन करना मेरे अनुसंधान का उदेष्य है।

लोकगीत धरती के गीत हैं, ये जीवन के गीत हैं, ये विजय के गीत हैं, ये... मंगल के गीत हैं और ये हमारी आशा के गीत हैं। जनता के द्वारा रचे गये, जनता के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले ये गीत, जनता की ही सम्पत्ति है। सुप्रसिद्ध विद्वान राल्फ विलियन्स ने इनके महत्व का प्रतिपादन करते हुए ठीक लिखा है कि, लोकगीत न पुराना होता है, और न नया वह तो उस जंगली पेड़ की तरह होता है। जिसकी जड़े अतीत की गहराइयों में घुसी होती है, परन्तु जिनमें नित्य नयी शाखायें, नयी पत्तियाँ और नये फल निकलते रहते हैं।

वस्तुतः इन लोकगीतों के माध्यम से जनता के स्वाभाविक एवं सहज भावों की अभिव्यक्ति होती है। लोकगीतों में सामान्य जन-जीवन के अकृतित्रम सरल, निश्छल सौन्दर्य के अद्भुत कान्ति की अपूर्व झलक होती है।

“मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन”

(दक्खनी हिंदी के संदर्भ में)

प्रथम अध्याय : मराठवाडा का भौगलिक एवं सांस्कृतिक परिचय

प्रस्ताविक:

1.1 मराठावाडा का निर्माण एवं क्षेत्र

1.2 मराठवाडा का भौगलिक हिरासत

1.3 मराठवाडा का सांस्कृतिक हिरासत

1.4 मराठवाडा का सामाजिक हिरासत

1.5 मराठवाडा का मुस्लिम परिवेश

1.6 मराठवाडा की भाषा एवं दक्खिनी हिंदी

1.7 मराठवाडा के दक्खिनी हिंदी के साहित्यकार एव उनका योगदान

उपसंहार

व्दितीय अध्याय: लोकसाहित्य एक परिचयात्मक अध्ययन

प्रस्ताविक:

2.1 लोक शब्द की व्युत्पत्ति

2.2 लोक शब्द का अर्थ

2.3 लोक शब्द का स्वरूप

2.4 लोक शब्द की परिभाषा

2.5 लोकसाहित्य का अर्थ एवं स्वरूप

2.6 लोकसाहित्य की परिभाषा

2.7 लोकसाहित्य की विशेषताएं

2.8 लोकसाहित्य का वर्गीकरण

2.8.1 लोकगीत

2.8.2 लोकगाथा

2.8.3 लोककथा

2.8.4 लोकनाट्य

2.8.5 प्रकीर्ण साहित्य

2.9 गीत शब्द व्युत्पत्ति

2.10 गीत अर्थ एवं स्वरूप

2.11 गीत की परिभाषा
2.12 लोकगीत और गीत में अंतर
2.13 लोकगीत का अर्थ
2.14 लोकगीत का स्वरूप
2.15 लोकगीत की परिभाषा
2.16 लोकगीत का वर्गीकरण
2.17 लोकगीत की विशेषताएं
2.18 लोकगीत का उद्भव एवं विकास: प्राश्चात्य दृष्टिकोण
2.19 लोकगीत का उद्भव एवं विकास: भारतीय दृष्टिकोण
उपसंहार

तृतीय अध्याय: दक्खनी हिंदी का उद्भव और विकास

प्रस्ताविक:

3.1 दक्खिनी शब्द की व्युत्पत्ति
3.2 दक्खिनी का नामकरण
3.3 दक्खिनी हिंदी का मूल आधार
3.4 हिंदी और दक्खिनी हिंदी
3.5 दक्खिनी हिंदी का भौगलिक क्षेत्र एवं सीमा विस्तार
3.6 दक्खिनी हिंदी का विकास
3.7 दक्खिनी हिंदी पर विभिन्न भाषाओँ का प्रभाव एवं मिश्रण
3.8 दक्खिनी हिंदी के विभिन्न रूप
3.9 दक्खिनी हिंदी की कुछ प्रमुख विशेषताएं
3.10 दक्खिनी के रूप में खडी बोली का विकास
3.11 दक्खिनी का विकास-क्रम
3.12 दक्खिनी हिंदी की शब्दावली: स्त्रोत और वर्गीकरण
3.13 दक्खिनी हिंदी के सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द
3.14 दक्खिनी हिंदी के कवि और लेखक
3.15 दक्खिनी हिंदी के आदिकालीन रचनाओं का परिचय
3.16 कुतुब-मुश्तरी
3.17 सबरस
उपसंहार

चतुर्थ अध्याय: मराठवाडा के मुस्लिम लोकगीतों सामाजिक अध्ययन

प्रस्ताविक:

4.1 समाज शब्द की व्युत्पत्ति

4.2 समाज का अर्थ

4.3 समाज का स्वरूप

4.4 समाज की परिभाषा

4.5 मराठवाडा के मुस्लिम समाज के दक्खिनी लोकगीत

4.5.1 जन्म गीत

4.5.2 नामकरण गीत

4.5.3 मुण्ड़न गीत

4.5.4 नाखून काटना

4.5.5 बाल काटना

4.5.6 खतना

4.5.7 लोरी गीत

4.5.8 बाल लोकगीत

4.5.9 सगाई के गीत

4.5.10 रसम गीत

4.5.11 मंजा गीत

4.5.12 मण्ड़वा गीत

4.5.13 हल्दी गीत

4.5.14 मेंहदी गीत

4.5.15 बारात आगमन गीत

4.5.16 माँमू जोड़ा गीत

4.5.17 चौकी गीत

4.5.18 तेल चढ़ाई गीत

4.5.19 पैमाना गीत

4.5.20 दुल्हन सिंगार गीत

4.5.21 सेहरा गीत

4.5.22 घोड़ी सवार गीत

4.5.23 बारात द्वार रुकाई गीत

4.5.24 अग्द(विवाह) गीत

4.5.25 बधाई गीत

4.5.26 जुलवाँ गीत

4.5.27 खिंचाई गीत
4.5.28 बिदाई गीत
4.5.29 सुहागरात गीत
4.5.30 गोद भराई गीत
उपसंहार

पंचम अध्याय : मराठवाडा के मुस्लिम समाज के दक्खिनी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन

प्रस्ताविक:
5.1 संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति
5.2 संस्कृति का अर्थ
5.3 संस्कृति का स्वरूप
5.4 संस्कृति की परिभाषा
5.5 मुस्लिम संस्कृति का सामान्य परिचय
5.6 मराठवाडा की मुस्लिम समाज की संस्कृति
5.7 मराठवाडा के मुस्लिम समाज के दक्खिनी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन
5.8 त्यौहार संबंधित लोकगीत
5.8.1 रमजान ईद
5.8.2 बकरीद ईद
5.8.3 ईद-मिलाप-दुआन्नवी-बाराह-वफात
5.8.4 शब-ए-बरात
5.8.5 मोहर्रम ताजिया
5.9 तीर्थस्थान एवं उत्सव संबंधित लोकगीत
5.9.1 मक्का
5.9.2 मदीना
5.9.3 कर्बला
5.10 सूफी संतों से संबंधित लोकगीत
5.10.1 ख्वाजा मैनोद्यीन चिश्ती
5.10.2 ख्वाजा बंदेनवाज गेसूदराज
5.10.3 महेबुब सुबहानी
5.10.4 हाजी अली
5.10.5 सैलानी बाबा
उपसंहार

षष्ठ अध्याय : शिल्प विधान

प्रस्ताविक

6.1 शिल्प शब्द की व्युत्पत्ति

6.2 शिल्प शब्द का अर्थ

6.3 शिल्प का स्वरूप

6.4 शिल्प की परिभाषा

6.5 शिल्प के तत्व

6.5.1 भाषा

6.5.2 शैली

6.5.3 अलंकार

6.5.4 बिम्ब

6.5.5 प्रतीक

6.5.6 छंद

6.6 मराठवाडा के मुस्लिम समाज के दक्खिनी लोकगीतों में शिल्प

6.6.1 दक्खिनी लोकगीतों की भाषा

6.6.2 दक्खिनी लोकगीतों की शैली

6.6.3 दक्खिनी लोकगीतों में अलंकार

6.6.4 दक्खिनी लोकगीतों का बिम्ब

6.6.5 दक्खिनी लोकगीतों में प्रतीक

6.6.6 दक्खिनी लोकगीतों छंद योजना

6.7 मराठवाडा के मुस्लिम समाज के दक्खिनी लोकगीतों में शब्द प्रयोग

6.7.1 तत्सम शब्द

6.7.2 तद्भव शब्द

6.7.3 अरबी शब्द

6.7.4 उर्दू शब्द

6.7.5 युग्मशब्द

6.7.6 पुनरवृत्यात्मक शब्द

6.7.7 मुहावरे

6.7.8 कहावतें

6.7.9 लोकोक्तियाँ

6.7.10 गालियाँ

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन, डॉ. कुलदीप, प्रगति प्रकाशन, आगरा,** 3, **प्रथम संस्करण,** 1972
2. **लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन, डॉ. कुलदीप, प्रगति प्रकाशन, आगरा,**
3. **लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. छोटे लाल बहरदार, भारती प्रकाशन, नई दिल्ली**
4. **लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, श्री कृष्णदास, साहित्यभवन प्रा.लि. इलाहाबाद**
5. **लोकगीत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ. विद्या चौहाण, प्रगति, प्रकाशन, आगरा-**3, **प्रथम संस्करण,** 1972
6. **लोकजीवन और साहित्य, डॉ. रामविलास वर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा**
7. **लोकधारा के नए आयाम, डॉ. भीमसिंह मलिक, पल्लव प्रकाशन,दिल्ली.**
8. **लोकसाहित्य का अध्ययन, डॉ. त्रिलोचन पाण्ड़ेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद**
9. **लोकसाहित्य का लोकतत्व, डॉ. रामनिवास सेतु प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली**
10. **लोकसाहित्य का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. श्रीराम शर्मा, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली**
11. **लोकसाहित्य के प्रतिमान, डॉ. कुन्दनलाल उत्प्रेति, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़**
12. **लोकसाहित्य में आमोद-प्रमोद, डॉ. रहमत उल्लाह, साहित्य रत्नालय, कानपुर**
13. **लोकसाहित्य विज्ञान, डॉ. सतेन्द्र, शिवलाल अग्रवाल, एण्ड कं. प्रा. लिमिटेड, दिल्ली, आगरा, जयपुर, प्रथम संस्करण, इ.स.** 1962
14. **लोकसाहित्य: संकल्पना व स्वरूप, डॉ. शरद व्यवहारे कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद**
15. **हिंदी साहित्य का आदिकाल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना**
16. **हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी**
17. **हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास-भाग, सं. राहुल सांकृत्यायन, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, इ.सन.** 1960

शोध छात्रा
कुरेशी अंजुम जिलानी

शोधनिर्देशिका
डॉ. शेख रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला
हिंदी विभाग
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, वसमत जिला हिंगोली